सप्तमेश द्वादश भावों में

(जातकाभरणम्, मानसागरी, जातकतत्त्वम् तथा बृहत पाराशर होराशास्त्र से)

- करूणा शर्मा व रश्मि शर्मा

लग्नस्थ सप्तमेश के शुभ फल

जातकाभरणम्- जातक विद्वान और चंचल होता है।

मानसागरी- लग्न में जातक पर-स्त्री से अल्प प्रीतिवान, रूपवान तथा अपनी भार्या (पत्नी) में चित्त वाला होगा।

जातकतत्त्वम्- जातक रूपवती, अच्छे विचारों वाली स्त्री का पति होता है।

लग्नस्थ सप्तमेश के अशुभ फल

जातकाभरणम्- जातक परस्त्रीगामी, दुष्ट हृदय, और वातरोग से पीड़ित होता है।

मानसागरी- जातक अनेक प्रकार के भोगों में अनुरक्त होता है।

जातकतत्त्वम्- सप्तमेश पापग्रह हो तो जातक शोकाकुल, स्नेहादि कोमल भावनाओं से हीन, भोगवती स्त्री का पति होता है।

बृहत पाराशर होराशास्त्र- जातक परस्त्रीगामी, दुष्टा, चतुर, अधीर और वात रोगी होता है।

द्वितीयस्थ सप्तमेश के शुभ फल

जातकाभरणम्- भाव में जातक स्त्री के द्वारा धन पाने वाला होता है।

बृहत पाराशर होराशास्त्र- जातक स्त्री द्वारा धन लाभ प्राप्त करता है।

द्वितीयस्थ सप्तमेश के अशुभ फल

जातकाभरणम्- जातक बहुत स्त्री वाला, दीर्घसूत्री (कम समय में होने वाले कार्य को बहुत देर से करने वाला) होता है।

मानसागरी- जातक की स्त्री दुष्टा तथा पुत्र-कामना वाली होती है। जातक को उसके द्वारा बुरे कार्य से धन की प्राप्ति होती है।

जातकतत्त्वम्- जातक की पत्नी दुष्ट स्वभाव की तथा पुत्रहीन स्त्री होती है। उसका चित्त चंचल तथा स्वभाव झगड़ालू होता है।

बृहत पाराशर होराशास्त्र- जातक बहुत पत्नी वाला और दीर्घसूत्री होता है।

तृतीयस्थ सप्तमेश के शुभ फल

मानसागरी- जातक आत्मबली तथा बन्धुवत्सल होता है। जातक की पत्नी सुन्दर होती है।

जातकतत्त्वम्- जातक आत्मबली, बन्धु-बान्धवों से प्रेम करने वाला होता है।

तृतीयस्थ सप्तमेश के अशुभ फल

जातकाभरणम्- जातक मृत सन्तति वाला होता है। बहुत यत्न करने पर एक पुत्र जीवित रहता है।

मानसागरी- जातक दु:खी होता है। उसकी पत्नी देवर के साथ प्रीति करने वाली तथा मित्रों के गृह में जाने वाली होती है।

जातकतत्त्वम्- सप्तमेश यदि पाप ग्रह हो तो उसकी पत्नी सुन्दर और क्रूर स्वभाव की तथा देवर में अनुरक्त होती है।

बृहत पाराशर होराशास्त्र- जातक की संतति नहीं जीती, बहुत यत्न से एक पुत्र जीवित रहता है।

चतुर्थस्थ सप्तमेश के शुभ फल

जातकाभरणम्- जातक सत्यवक्ता, बुद्धिमान् और धर्मात्मा होता है।

बृहत पाराशर होराशास्त्र- जातक सत्यवादी, बुद्धिमान, धर्मात्मा होता है।

चतुर्थस्थ सप्तमेश के अशुभ फल

जातकाभरणम्- जातक स्त्रीवश में रहने वाला और दन्तरोग वाला होता है।

मानसागरी- जातक चंचल, पिता के वैरियों से स्नेह करने वाला तथा उसका पिता भी कटुभाषी होता है। जातक की पत्नी अपने पिता के यहां आश्रय पाती है।

जातकतत्त्वम्- जातक चंचल चित्त, पितृद्रोही स्नेही होता है। उसका पिता कटुवक्ता होता है और जातक की पत्नी का पालक होता है।

बृहत पाराशर होराशास्त्र- जातक की स्त्री वश में नहीं रहती और दन्तरोग से युक्त होता है।

पंचमस्थ सप्तमेश के शुभ फल

जातकाभरणम्- जातक मानी, सब गुणों से युक्त, सदा आनन्द से पूर्ण तथा सब प्रकार के धन से युक्त होता है।

मानसागरी- जातक सौभाग्य सम्पन्न, पुत्रवान, साहस के साथ प्रिय वस्तु प्राप्त करने वाला तथा जातक का पुत्र अपनी माता का पालन करने वाला होता है।

जातकतत्त्वम्- जातक सौभाग्यशाली, पुत्रादि से युक्त होता है तथा उसका पुत्र उसकी स्त्री का पालक होता है।

बृहत पाराशर होराशास्त्र- जातक मानी, सब गुणों से युक्त, सदा हर्षित और सब धन से युक्त होता है।

पंचमस्थ सप्तमेश के अशुभ फल

मानसागरी- जातक दुष्ट बुद्धि वाला होता है।

जातकतत्त्वम्- जातक पत्नी से कटु सम्बन्ध रखने वाला होता है।

षष्ठस्थ सप्तमेश के शुभ फल

जातकाभरणम्, मानसागरी, जातकतत्त्वम् तथा बृहत पाराशर होराशास्त्र में छठे भाव में स्थित सप्तमेश का कोई शुभ फल नहीं बताया गया है।

षष्ठस्थ सप्तमेश के अशुभ फल

जातकाभरणम्- जातक की स्त्री रोगिणी अथवा स्त्री से शत्रुता होती है, स्वयं क्रोधी और सब सुख से हीन होता है।

मानसागरी- जातक अपनी पत्नी से द्वेष करके उसे पृथक कर दे, वह भी रुग्णा रहे, किन्तु सप्तमेश क्रूर ग्रह हो तो जातक अधिक स्त्री सहवास के कारण क्षय रोग ग्रस्त होकर मृत्यु को प्राप्त करे।

जातकतत्त्वम्- जातक के अपनी पत्नी से अच्छे सम्बन्ध नहीं होते हैं तथा वह रोगिणी होती है। यदि सप्तमेश क्रूर ग्रह हो तो स्त्री के कारण मृत्यु को प्राप्त होता है।

बृहत पाराशर होराशास्त्र - जातक की स्त्री रोगिणी या स्त्री से शत्रुता होती है, स्वयं वह क्रोधी और सुखहीन होता है।

सप्तमस्थ सप्तमेश(स्वगृही) के शुभ फल

जातकाभरणम्- जातक स्त्री सुख से युक्त, धीर, विद्यावान और बुद्धिमान होता है।

मानसागरी- जातक दीर्घजीवी, प्रीति वत्सल, निर्मल हृदय, शीलवान तथा तेजस्वी होता है।

जातकतत्त्वम्- जातक दीर्घायु, प्रेमी, निर्मल स्वभाव का, सुशील तेजस्वी होता है।

बृहत पाराशर होराशास्त्र- जातक स्त्री सुख से युक्त, धीर, चतुर और बुद्धिमान होता है।

सप्तमस्थ सप्तमेश(स्वगृही) के अशुभ फल

जातकाभरणम्- जातक वातरोगी होता है।

बृहत पाराशर होराशास्त्र- जातक वातरोगी होता है।

अष्टमस्थ सप्तमेश के शुभ फल

जातकतत्त्वम्- जातक वेदों में आसक्ति रखने वाला होता है।

अष्टमस्थ सप्तमेश के अशुभ फल

जातकाभरणम्- जातक स्त्री सुख से हीन, उसकी स्त्री रोगिणी, कुशीला और स्वतन्त्रता होती है।

मानसागरी- जातक गणिका-प्रेमी, अविवाहित, नित्य चिन्तायुक्त और इसी कारण दु:खी रहता है।

जातकतत्त्वम्- जातक वेश्यागामी, परगृह और स्त्री में अनुरक्त, अपनी पत्नी के सुख से वंचित रहता है।

बृहत पाराशर होराशास्त्र- जातक स्त्री सुख से हीन, स्त्री रोगयुक्ता, दुष्टा और वश में नहीं रहने वाली होती है।

नवमस्थ सप्तमेश के शुभ फल

जातकाभरणम्- जातक बहुत कार्यों को आरम्भ करने वाला होता है।

मानसागरी- जातक तेजवान और शीलवान होगा तथा उसकी पत्नी भी वैसी ही होगी। यदि सप्तमेश पर लग्नेश की दृष्टि हो तो जातक नीतिज्ञान में प्रबल होगा।

जातकतत्त्वम्- जातक तेजस्वी, सुशील, जनप्रिय होता है। उसकी पत्नी उसके अनुरूप होती है। जातक की पत्नी आस्थावान् होती है।

बृहत पाराशर होराशास्त्र- जातक बहुत कार्य आरम्भ करने वाला होता है।

नवमस्थ सप्तमेश के अशुभ फल

जातकाभरणम्- जातक अनेक स्त्री से संग करना और स्त्री में आसक्ति रखने वाला होता है।

मानसागरी- यदि सप्तमेश क्रूर ग्रह हो तो जातक क्लीव और कुरूप होगा।

जातकतत्त्वम्- यदि सप्तमेश क्रूर ग्रह हो तो उक्त शुभ गुणों में न्यूनता होती है।

बृहत पाराशर होराशास्त्र- जातक का अनेक स्त्रियों से संग रहता है, स्त्री में आसक्त होता है।

दशमस्थ सप्तमेश के शुभ फल

जातकाभरणम्- जातक की पत्नी पतिव्रता होती है, स्वयं धर्मात्मा और धन-पुत्रादि से सुखी रहता है।

बृहत पाराशर होराशास्त्र- जातक स्वयं धर्मात्मा और धन पुत्रादि से युक्त होता है।

दशमस्थ सप्तमेश के अशुभ फल

मानसागरी- जातक राजाओं जैसे दोषों से युक्त, लम्पट तथा कपट हृदय होगा। यदि सप्तमेश क्रूर ग्रह होगा तो जातक दु:खार्त तथा क्षत्रियों के वश में रहने वाला होगा।

जातकतत्त्वम्- जातक नृपदोषी, लम्पट अथवा क्रूर होता है। यदि सप्तमेश क्रूर ग्रह होगा तो जातक दुष्ट स्वभाव का होता है। उसका श्वसुर विख्यात होता है और उसकी पत्नी अपनी सास की अनुगामी होती है।

बृहत पाराशर होराशास्त्र- जातक की स्त्री वश में नहीं रहती है।

एकादशस्थ सप्तमेश के शुभ फल

जातकाभरणम्- जातक स्त्री के द्वारा धनलाभ करने वाला होता है और अधिक कन्या सन्तति वाला होता है।

मानसागरी- जातक की धर्मानुकूल विवाह से प्राप्त पत्नी पतिभक्ता, रूप सम्पन्न एवं सुशीला होगी।

जातकतत्त्वम्- जातक भक्त, सुन्दर, सुशील स्त्री से विवाह करता है।

बृहत पाराशर होराशास्त्र - जातक को स्त्री के द्वारा धन लाभ और अधिक कन्या वाला होता है।

एकादशस्थ सप्तमेश के अशुभ फल

जातकाभरणम्- जातक पुत्रादि से अल्प सुख पाने वाला होता है।

जातकतत्त्वम्- जातक की पत्नी प्रसवकाल में मृत्यु को प्राप्त होती है।

बृहत पाराशर होराशास्त्र- जातक को पुत्र का सुख अल्प होता है।

द्वादशस्थ सप्तमेश के शुभ फल

जातकाभरणम्- जातक वस्त्र का व्यापारी होता है।

मानसागरी- जातक अपने घर और बान्धवों में अनुरक्त रहने वाला हो।

बृहत पाराशर होराशास्त्र- जातक वस्त्र के व्यापार से लाभ करने वाला होता है।

द्वादशस्थ सप्तमेश के शुभ फल

जातकाभरणम्- जातक दरिद्र, कृपण होता है, उसकी स्त्री भी खर्चीली होती।

मानसागरी- जातक की स्त्री चंचल स्वभाव की, दुष्टा, अपने पति को छोड़कर अन्यत्र जाने वाली होती है।

जातकतत्त्वम्- जातक गृहस्थी के बन्धनों से मुक्त स्वेच्छाचारिणी और दुष्टा पत्नी का पति होता है।

बृहत पाराशर होराशास्त्र- जातक दरिद्र, कृपण होता है। उसकी स्त्री भी बहुत खर्च करने वाली होती है।

*****